Topic 66

ण्यन्त प्रक्रिया - 2

स्था गतिनिवृत्तौ ।

अर्ति-ह्री-व्ली-री-क्नूयी-क्ष्माय्यातां पुङ्णौ ।
स्थापयति ।

तिष्ठतेरित् ।

उपधाया इदादेशः स्यात् चङ्परे णौ । अतिष्ठिपत् ।
घट चेष्टायाम् ।

चङ्-परक 'णि' परे होने पर 'स्था' धातु की उपधा के स्थान पर ह्रस्व इकार आदेश होता है। उदाहरण के लिए लुङ् लकार के प्रथम पुरुष-एकवचन में 'स्था' धातु से णिच्, पुक्, च्लि-चङ्, अडागम आदि होकर 'अ स्थाप् इ अ त' रूप बनता है। यहाँ चङ्-परक 'णि' 'इ अ' परे होने के कारण प्रकृत सूत्र से 'स्थाप्' की उपधा-आकार के स्थान पर इकार होकर 'अ स्थ् इ प् इ अ त' = 'अ स्थिप् इ अ त' रूप बनता है। इस स्थिति में 'स्थिप्' को द्वित्व, अभ्यास-कार्य, अभ्यास के थकार को चर्-तकार और षत्व तथा ष्टुत्व आदि होकर 'अतिष्ठिपत्' रूप सिद्ध होता है।

मितां ह्रस्वः ।

घटादीनां ज्ञपादीनां च उपधाया ह्रस्वः स्याण्णौ ।
घटयति । ज्ञप ज्ञाने ज्ञापने च । ज्ञपयति ।
अजिज्ञपत् ।